पशुओं के लिये पौष्टिक आहार की योजनायें

4645. **श्री नाथू राम अहिरवार :**
श्री ईश्वर चौधरी :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या पशुओं को पौष्टिक आहार देने के लिये केन्द्रीय सरकार ने कौन कौन सी योजनायें प्रारम्भ की हैं ;

(ख) देश में पशुपालन को पौष्टिक आहार उपलब्ध करने के लिये मंत्रालय ने उन्नत किस्म की घास के उत्पादन के लिये कितने अनुसंधान संस्थान चालू किये हैं ; और

(ग) यह घास अनुसंधान संस्थान कहां कहां पर हैं एवं उनके नाम क्या है तथा प्रत्यक संस्थान द्वारा की गई प्रगति का विवरण क्या है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (प्रो० शेर सिंह): (क) केन्द्रीय सरकार ने पशुओ के लिय उपयुक्त किस्म के दाने-चारे के विकास के लिये निम्नलिखित योजनाये शुरू की हैं :

(i) भारतीय चरागाह तथा चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी की स्थापना ।

(ii) चारा उत्पादन तथा प्रदर्शन के लिये 7 क्षेत्रीय केन्द्रो की स्थापना ।

(iii) चारे वाली फसलों के विषय में समन्वित अनुसंधान परियोजना ।

(iv) कृषि उपोत्पादो तथा औद्योगिक व्यर्थ पदार्थों का प्रयोग करके पशुओं के लिये मितव्ययी राशन तैयार करने के संबंध में समन्वित अनुसधान परियोजना ।

(ख) एक ।

(ग) भारतीय चारागाह तथा चारा अनुसंधान संस्थान झांसी ।

यह संस्थान सक्षम पशु उत्पादन, मृदा उत्पादिता को बनाये रखने और भूमि तथा जलसंरक्षण के लिये अच्छे किस्म के चारे के निरन्तर उत्पादन मे संबंधित घास, चरागाह एवं चारे वाली फसलों का प्राथमिक तथा व्यावहारिक अनुसंधान करता है । यह संस्थान आधुनिक तकनीकों के प्रयोग मे अधिक उत्पादनशील, पौष्टिक, उर्वरको से भली भांति प्रभावित होने वाली तथा रोग और कीट प्रतिरोधी चारे की फसलों का विकास करने में लगा हुआ है । महत्वपूर्ण देशी घासो, चरी, जई, लोबिया, ग्वार, रिज्का तथा बर्सीम की उत्तम किस्मों का पता लगाया गया है । संस्थान मे विभिन्न चारे वाली फसलो का इस प्रकार चुनाव किया गया है :—चरी का आई० जी० एफ० आर० आई० एम०–3, रिज्क का आई०जी० एफ० आर०आई०एम–271 तथा आई०जी० एफ० आर०आई०एम०–272, लोबिया का आई० जी० एफ० आर० आई० एस०–998, तथा बर्सीम का आई० जी० एफ० आर० आई०एम०–99–1 यह देखा गया है कि चारे की इन किस्मो से बहुत अधिक हरा चारा और सुखी हुई उत्पाद उपलब्ध होती है । इसके अलावा चारे का उत्पादन बढ़ाने के प्रयत्न और प्राकृतिक तथा बोए हुए चरागाहों की उत्पादिता में वृद्धि करने के बारे में अध्ययन भी किये गये हैं । बहुफसली खेती की पद्धतियों को अपनाकर तथा उर्वरकों का प्रयोग करके प्रति यूनिट क्षेत्र तथा प्रति यूनिट समय में चारे का उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से अध्ययन किये गये हैं । घासपात नियंत्रण तथा उससे संबंधित पहलुओं के विषय में अनुसंधान कार्यों को तेज किये जाने के परिणामस्वरूप चरागाह और बोई हुई फसलो का मानकीकरण हो सका है । चारे वाली फसलों से संबंधित कृषि इंजीनियरी

के क्षेत्र में विभिन्न किस्म के साधारण और सस्ते औजार तैयार किये गये हैं।

इस संस्थान ने अखिल भारतीय स्तर पर अनुसंधान तथा विकास अधिकारियों के लिये चारा उत्पादन, उसके उपयोग और संरक्षण के विषय में अग्रिम पाठ्यक्रम शुरू किये है।

Anticipated food production for current year and its import to meet the deficit

4646. SHRI P. M. MEHTA:
SHRI K. LAKKAPPA:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether India's food production for the current year will be about 100 million tonnes less than last year's;

(b) if so, reasons for the same; and

(c) whether India would import grains to meet the deficit and to continue supplies through the public distribution system?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). Firm estimates of foodgrains production for the current year (1972-73) would become available only after the close of the agricultural year, *i.e.* sometime in July-August, 1973. However, the production of kharif foodgrains during the current year is likely to be lower than that of last year due to the prevalence of severe drought in certain States and erratic and deficient rainfall in others. The production of rabi foodgrains, on the other hand, is likely to be higher than last year owing to the impact of the Emergency Agricultural Production Programme and the beneficial winter rains in many rabi producing areas. But the increase in rabi season is not likely to offset completely the loss in kharif production.

(c) To meet the short supply situation and to maintain supplies through the public distribution system, about 2 million tonnes of foodgrains are being imported during this year.

Eighteenth Meeting of the Central Health Council at Bhubaneshwar

4647. SHRI P. M. MEHTA:
SHRI BHARAT SINGH CHOWHAN:

Will the Minister of HEALTH AND FAMILY PLANNING be pleased to state:

(a) whether the 18th meeting of the Central Health Council was held at Bhubaneshwar on the 30th January, 1973,

(b) if so, the expenditure incurred on it, item-wise, and the sources from which this amount was received;

(c) whether the mobilisation and deployment of medical and pre-medical personnel to provide health services in the rural sector was one of the items of discussions; and

(d) other points discussed at the Conference and the decisions arrived at?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING (SHRI A. K. KISKU) (a) The meeting was held on the 31st January and 1st February, 1973.

(b) The Government of India in the Ministry of Health and Family Planning have so far incurred from the Consolidated Fund of India an expenditure of Rs. 27,758.35 on the travelling allowance of the Ministers and officers who attended the meeting. The details of expenses incurred by the State Governments and other Ministries of the Government of India, whose representatives attended the meeting, are not available.

(c) Yes.

(d) Copies of the resolutions passed at the meeting are laid on the Table of the House. [*Placed in Library. See* No. LT-4605/73.]